टिप्पणी

17

पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ

आपने नवभारत टाइम्स, दैनिक हिंदुस्तान और राष्ट्रीय सहारा जैसे समाचार-पत्रों और कादंबिनी, सरिता, हंस जैसी पत्रिकाओं में अनेक गद्य रचनाएँ पढ़ी होंगी। पिछले पाठ में आपने संपादकीय के बारे में पढ़ा। इन पत्र-पत्रिकाओं को हाथ में लेते ही सबसे पहले आप उनकी विषय-सूची देखते होंगे। उस सूची में कहानी, व्यंग्य, चुटकुले, रेखाचित्र आदि लिखा हुआ भी अवश्य देखते होंगे और सोचते होंगे कि ये क्या हैं? वास्तव में ये गद्य की विविध विधाएँ या रूप हैं। इनमें से व्यंग्य का अपना अलग ही महत्त्व है। इस पाठ में आप 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' नामक व्यंग्य-रचना पढ़ने जा रहे हैं, जिसे प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री हरिशंकर परसाई ने लिखा है। यह रचना एक ओर तो दो पीढ़ियों के बीच अंतर और संघर्ष दिखाती है तो दूसरी ओर कर्म किए बिना फल प्राप्ति की आकांक्षा रखने वालों पर कटाक्ष या चोट भी करती है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- व्यंग्य का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- व्यंग्य-विधा के तत्त्वों के आधार पर 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' पाठ का विवेचन कर सकेंगे;
- दो पीढ़ियों के बीच चल रहे संघर्ष को बता सकेंगे;
- व्यंग्य की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

अगले पृष्ठ पर दिया गया चित्र देखिए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

अब आप निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

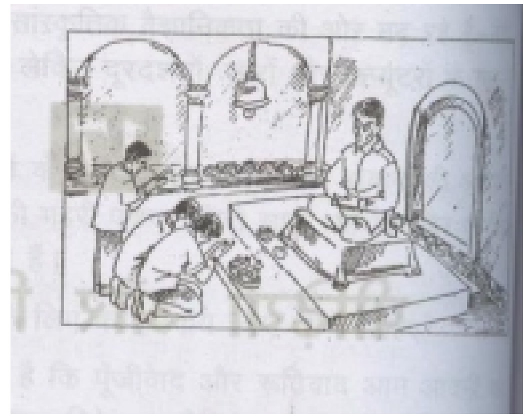

(क) चित्र में क्या दिखाया गया है?

....

(ख) मंदिर में जिसे भोग लगाया जा रहा है, क्या वह देवता की मूर्ति है? यदि नहीं तो वह कौन है?

....

17.1 मूलपाठ

आइए, इस व्यंग्य को अच्छी तरह पढ़ लिया जाए।

पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ

साहित्य के वयोवृद्ध थकित हुए।

वे लाठी टेकते हुए सड़क पर चलते।
मोटा चश्मा लगाकर चाँद देखते।
निमोनिया की दवा जेब में रखकर बगीचे में घूमते।
कान में ऊँचा सुनने का यंत्र लगाकर संगीत-सभा में बैठते।
भोजन से अधिक मात्रा में पाचन का चूरन खाते।

एक दिन तरुणों ने उनसे कहा, ''प्रातः स्मरणीयो, सुनामधन्यो! आप अब वृद्ध हुए– वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध और कलावृद्ध हुए। आप अब देवता हो गये। हम चाहते हैं कि आप लोगों को मंदिर में स्थापित कर दें। वहाँ आप आराम से रहें और हमें आशीर्वाद दें।''

वयोवृद्ध थोड़ी देर तक विचार करते रहे। फिर बोले, ''प्रस्ताव कोई बुरा नहीं है। पर हमारे यश का क्या होगा?''

''हम आपकी जय बोलेंगे।'' तरुणों ने कहा।
''और हमारे झण्डों का क्या होगा?''
''हम आपके झण्डों को मंदिर के सामने के पीपल पर टाँग देंगे। वे वहाँ ऊँचे फहरायेंगे।''
''और हमारे भोग का क्या होगा?''
''हम आपके भोग का प्रबंध करेंगे। रोज हम पकवानों के थाल लेकर आयेंगे।''
''हमें श्रद्धा भी तो चाहिए। उसका क्या प्रबंध होगा?''
''हम रोज़ आपकी आरती करेंगे, और आपके चरणों पर मस्तक रखेंगे।''
''हमारे अर्थ का क्या होगा?''

शब्दार्थ

वयोव द्ध – बहुत बूढ़े
निमोनिया – एक रोग जो ठंड के कारण होता है। (पसलियों में जकड़न का अनुभव होता है)
तरुण – युवक, जवान
समाधान – उपाय करना
ज्ञानव द्ध – अत्यंत ज्ञानी
कलाव द्ध – कला में अत्यंत निपुण

टिप्पणी

''आपकी रॉयल्टी हम मंदिर में ही पहुँचा दिया करेंगे। आपको हम हर पाठ्‌य-पुस्तक में रखवायेंगे और जो प्रकाशक धन देने में आनाकानी करेगा, उसे ठीक करेंगे।''

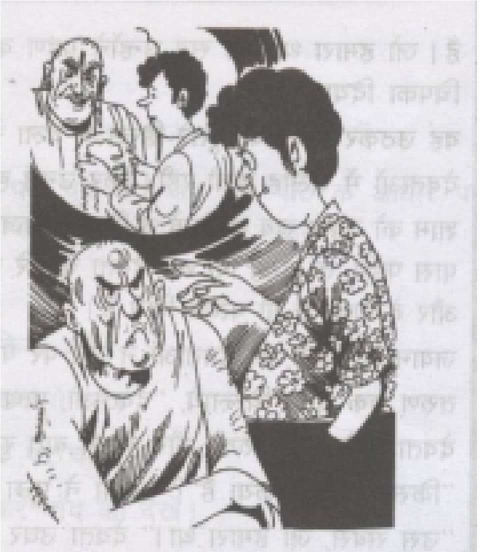

''पर हम कर्म के बिना कैसे जीवित रहेंगे?'' वयोवृद्ध ने कहा।

तरुणों ने समाधान किया, ''जहाँ तक कर्म का संबंध है, आप लोगों की संस्मरण की अवस्था है। आप लोग आपस में संस्मरण सुनायेंगे ही। उनका रिकार्डिंग होता जायेगा और हम उनकी पुस्तकें छपवा देंगे।''

सयानों ने आपस में सलाह की और एकमत से कहा, ''हमें मंज़ूर है। बनाओ हमें देवता।''

युवकों ने एक दिन समारोहपूर्वक वयोवृद्धों को देवता बनाकर मंदिर में प्रतिष्ठित कर दिया। उनके झण्डे पीपल पर चढ़ा दिये। उनकी आरती की, उनके चरण छुए और भोग लगाकर काम पर चले गये।

देवता जब अकेले छूट गये, तब उनका ध्यान तरुणों पर गया।
एक ने बात उठायी, ''लड़के इस समय न जाने क्या कर रहे होंगे!''
''सड़कों पर घूम रहे होंगे,'' दूसरे ने कहा।
तीसरा बोला, ''कोई खा रहा होगा, पी रहा होगा।''
चौथे ने कहा, ''कोई खेल रहा होगा।''
पाँचवें ने कहा, ''कोई नाटक देख रहा होगा, कोई फिल्म देख रहा होगा।''
छठा बोला, ''कोई प्रेम कर रहा होगा।''
सातवें ने कहा, ''कोई बढ़िया कपड़े पहने लोगों को लुभाता घूम रहा होगा।''
आठवें ने कहा, ''कोई कविता सुना रहा होगा और 'वाह-वाह' लूट रहा होगा।''

वे उदास हो गये। कहने लगे, ''लड़के बाहर ऐसा आनंद कर रहे हैं; जीवन को इस तरह भोग रहे हैं! और देवता बने हम इस मंदिर की कारा में बैठे हैं।''

तभी एक देवता, जो अब तक चुप था, बोला ''खाने-खेलने दो लड़कों को। हम तो न चल सकते, न खेल सकते, न दौड़ सकते। ज़्यादा खा लेंगे, तो अजीर्ण हो जायेगा। ज्यादा बोलेंगे, तो साँस फूल उठेगी। प्रेम करने की भी अवस्था नहीं रही। भोगने दो जवानों को जीवन। वे हमारी जय तो बोलते हैं, हमारे झण्डे तो फहराते हैं! हमारी आरती तो करते हैं! और क्या चाहिए हमें!''

लेकिन बाकी देवताओं को उसकी बात अच्छी नहीं लगी। वे बोले, ''तुम बिल्कुल निःसत्व हो। तुम्हें इस बात का कोई बुरा नहीं लगता कि जहाँ-जहाँ हम थे, वहाँ-वहाँ वे जम गये

शब्दार्थ

रॉयल्टी	– पुस्तक बिकने पर लेखक को मिलने वाला पैसा
आनाकानी करना	– किसी काम को न करने की अस्पष्ट इच्छा दिखाना
संस्मरण	– पुरानी यादें
वाह-वाह लूटना	– प्रशंसा सुनना
कारा	– जेल
अजीर्ण	– हज़म न होना

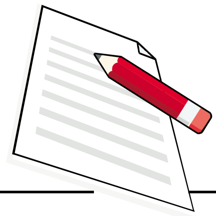

टिप्पणी

हैं। जो हमारा था, वह सब उन्होंने ग्रहण कर लिया है और हमें प्रतिमा बनाकर यहाँ चिपका दिया है।''

वह उठकर मंदिर के दूसरे हिस्से में चला गया।

देवताओं में सलाह होती रही। फिर उनमें हलचल हुई।

शाम को युवक जब थालियों में मिष्ठान सजाकर देवताओं की जय बोलते हुए मंदिर के पास पहुँचे, तो देखा कि सब देवता चबूतरे पर खड़े हैं। उनके पास पत्थरों का ढेर है, और वे हाथों में भी पत्थर लिये हैं।

जवान आगे बढ़े, तो देवताओं ने उन पर पत्थर बरसाना शुरू कर दिया।

तरुण रुक गये। चिल्लाये, ''देवताओ, पत्थर क्यों मार रहे हो?''

देवता बोले, ''वहीं रुको और हमारी बात सुनो। तुमने हमें वंचित किया है।''

''किससे वंचित किया है''? तरुणों ने पूछा।

''उस सबसे, जो हमारा था।'' देवता उधर से चिल्लाए।

तरुणों ने जवाब दिया, ''हमने तुम्हें वंचित नहीं किया। तुमने अपने आप को वंचित किया है, तुम्हारी थकान ने, तुम्हारी उम्र ने, तुम्हारी चेतना-दुर्बलता ने, तुम्हारी शक्ति-हीनता ने तुम्हें वंचित किया है। हम तो तुम्हें पूज रहे हैं, और तुम देवता होकर पत्थर मारते हो!''

देवताओं ने कहा, ''हमें ऐसी पूजा नहीं चाहिए। हम भी तुम्हें वंचित करेंगे।''

एक देवता बोला, ''तुम उन सड़कों पर नहीं चलोगे, जिन पर हम चलें। वे मात्र हमारी हैं।''

दूसरा देवता चिल्लाया, ''जो हमने खाया, वह तुम नहीं खाओगे, क्योंकि वह मात्र हमारा भोज्य था।''

तीसरा बोला, ''जो हमने भोगा, वह तुम नहीं भोगोगे, वह मात्र हमारा भोग्य था।''

चौथा चिल्लाया, ''जो हमने किया, वह तुम नहीं करोगे, क्योंकि वह केवल हमारा कर्म था।''

पाँचवाँ बोला, ''तुम अपने झण्डे नहीं फहराओगे। झण्डे सिर्फ़ हमारे होंगे। हमारे बाद किसी का कोई झण्डा नहीं होगा।''

तरुणों ने कहा, ''आप लोग देवता हैं, दरोगा नहीं। देवोचित व्यवहार करिए।'' आप जिये, इसलिए क्या जीवन पर सिर्फ़ आपका अधिकार हो गया और कोई दूसरा जी भी नहीं सकता! हमें यह सब स्वीकार नहीं है।''

''नहीं है तो लो''-कहकर देवताओं ने पत्थर बरसाना शुरू कर दिया।

उन जवानों ने भी पास ही पड़े मिट्टी के ढेर से पत्थर उठाकर उन देवताओं पर फेंकने शुरू कर दिये।

एक युवक पीपल पर चढ़ गया और देवताओं के झण्डे फाड़कर फेंक दिये।

दोनों तरफ़ से पथराव हो रहा था, दोनों तरफ़ से गाली-गलौज हो रही थी।

एक राहगीर से दूसरे ने पूछा, ''यह क्या मामला है?''

राहगीर ने जवाब दिया, ''दो पीढ़ियों की कलागत मूल्यों पर बहस चल रही है।''

–हरिशंकर परसाई

शब्दार्थ

निःसत्व – जिसका सार निकल गया हो
प्रतिमा – मूर्ति
मिष्ठान – मिठाइयाँ आदि
वंचित – जिसके पास कुछ न हो
चेतना-दुर्बलता – सोचने-समझने में कमज़ोर
भोज्य – खाने योग्य पदार्थ
भोग्य – भोगने योग्य
कलागत मूल्य – कला में छिपे मूल्य

टिप्पणी

17.2 बोध प्रश्न

आप 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' व्यंग्य पढ़ चुके हैं। अब इस पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का निशान (√) लगाइए।

1. तरुणों ने वृद्धों से कहा,

   (क) आप वृद्ध हैं, काम न किया करें।

   (ख) आप देवता बनकर आराम से रहें।

   (ग) आप लाठी टेकते सड़क पर चलें।

   (घ) आप मोटा चश्मा लगाकर चाँद को देखें।

2. तरुण चाहते थे कि,

   (क) वृद्धों की सेवा करें।

   (ख) वृद्धों की बात न मानें।

   (ग) वृद्धों का स्थान लें।

   (घ) अपने झंडे फहरायें।

3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित घटनाओं को सही क्रम में लिखिए:

   (क) वृद्धों द्वारा तरुणों से बहुत-से प्रश्न पूछना।

   (ख) तरुणों द्वारा वृद्धों को आराम से रहने की सलाह देना।

   (ग) एक राहगीर का दूसरे राहगीर से प्रश्न पूछना।

   (घ) तरुणों द्वारा थालियों में मिठाई सजाकर मंदिर पहुँचना।

   (ङ) देवताओं द्वारा तरुणों पर पत्थर बरसाना

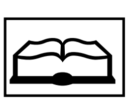

17.3 आइए समझें

आइए, 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' पाठ को ठीक से समझने से पहले जान लें कि व्यंग्य क्या है?

व्यंग्य क्या है?

जब कही गई बात का अर्थ कुछ और हो तथा जो किसी विसंगति (यानी जो होना चाहिए, वह न होकर कुछ और हो) पर चोट करता हो– व्यंग्य कहलाता है, जैसे– कहा जाए– ''था तो वह एक सरकारी अधिकारी परंतु काम कर रहा था, वह भी ईमानदारी के साथ।'' इसका अर्थ हुआ कि सामान्यतः लोग यह मानते हैं कि सरकारी अधिकारी कोई काम नहीं करते परंतु यह व्यक्ति इस धारणा को तोड़कर अपना काम ईमानदारी के साथ कर रहा है अर्थात् जैसा माना जाता है उसकी विपरीत दिशा में कार्यरत है।

व्यंग्य में शब्दों की गहरी मार होती है जो ऊपर से नीचे तक व्यक्ति को झकझोर कर

रख देती है। व्यंग्य में बात करने का अर्थ है विचारों को कुछ इस प्रकार प्रस्तुत करना कि उसका प्रभाव सीधा दिल और दिमाग पर हो, साथ में भिन्न प्रकार की हँसी भी आए और वह हँसी ऐसी करारी चोट पैदा करे कि अगला व्यक्ति तिलमिला कर रह जाए और उस बात पर गहराई से सोचने पर मज़बूर हो जाए। सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री कन्हैयालाल नंदन का कहना है, कि ''व्यंग्य का लिखना एक साधना है और व्यंग्य का सहना उससे भी बड़ी साधना है।''

आप अक्सर अखबारों में कार्टून का कोना देखते होंगे। उसमें रोज़मर्रा की जिंदगी से जुड़ी किसी-न-किसी घटना को परोक्ष रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इसे केवल चित्र न समझकर उस घटना पर टिप्पणी समझनी चाहिए। कार्टून में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र से संबंधित किसी विसंगति या घटना पर कार्टूनिस्ट की दृष्टि छिपी होती है। इसी प्रकार किसी व्यंग्य की विषय-वस्तु सत्य पर आधारित होती है। वह सत्य किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो सकता है।

व्यंग्य को अंग्रेज़ी भाषा में 'सटायर' भी कहते हैं जो मूलतः लैटिन भाषा से आया है। इसका अर्थ होता है 'गड़बड़झाला'। गुजराती भाषा में इसे 'कटाक्ष' और उर्दू में 'तंज' कहा जाता है। डॉ0 विजय शुक्ल का कहना है कि ''व्यंग्य केवल परिहास या मनोरंजन मात्र नहीं है। कुछ और है, जिसे उसका लेखक अपने वैषम्य व बेतरतीब माहौल के बीच पकड़ता है। वह अमृत भी हो सकता है, जहर भी, और कुछ भी जिसे पीकर, अपने आप पर ढालकर, किसी एक संपूर्ण चिंतन का रूप देकर, तब उसे कलात्मक खुशनुमा लिफ़ाफ़े में रखकर पाठक के सामने पेश कर देता है। व्यंग्य मुख्यतः सत्य को सामने लाता है। पाखंड का पर्दाफ़ाश करता है। जीवन की सच्चाई प्रस्तुत करता है। सीधे-सीधे शब्दों का प्रयोग कर अर्थ में चमत्कार पैदा करता है।

17.4 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' का तात्विक विवेचन

पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ पाठ आप पढ़ चुके हैं। आशा है इसे पढ़ते समय आपको आनंद भी मिला होगा। आइए, अब हम व्यंग्य के तत्त्वों के आधार पर इस पाठ का विवेचन करते हैं।

अंश - 1

भूमिका

लेखक व्यंग्य का आरंभ इस सूचना से करता है कि वयोवृद्ध साहित्यकार थक चुके हैं। उनकी अवस्था में आई शारीरिक दुर्बलता का चित्रण करने के लिए लेखक बताता है कि उन्हें चलने के लिए सहारा चाहिए, ठीक से देख पाने के लिए चश्मा जरूरी है, प्रातःकाल बगीचे में घूमने पर उन्हें ठंड लगने से निमोनिया हो सकता है तथा अब वे भोजन को भी आसानी से पचा नहीं पाते।

आप सोचेंगे कि इस पाठ की आरंभिक पंक्तियों में व्यंग्य कहाँ है? ऐसे बूढ़े तो हम रोज़ ही देखते हैं जो लाठी टेककर चलते हैं, चश्मा लगाते हैं, निमोनिया की दवा रखते हैं, कान में ऊँचा सुनने का यंत्र लगाते हैं और पाचन का चूरन खाते हैं। आपकी बात ठीक

है। लेकिन आप व्यंग्य से यह उम्मीद मत रखिए कि वह आपको इस लोक से उठाकर किसी दूसरे लोक में ले जाएगा। वह आपके ही जीवन-जगत की विसंगतियों, विषमताओं, बनावटीपन और पाखंड से उभरता है और व्यंग्यकार उन पर चोट करता है। इस व्यंग्य के आरंभ में लेखक ने शरीर से क्षीण होते, साहित्यिक क्षेत्र के ऐसे बूढ़ों का उल्लेख किया है, जिन्होंने अपने जीवन में भरपूर सुख और प्रसिद्धि को प्राप्त की है लेकिन इन सुखों और प्रतिष्ठा को वे छोड़ना नहीं चाहते। प्राकृतिक दृष्टि से तो वे क्षीण या कमज़ोर हो रहे हैं अथवा इस लायक नहीं रहते कि और सुख भोग सकें लेकिन मोह न छोड़ पाने के कारण कृत्रिम या बनावटी उपाय करते हैं। आपने कई बार एक दृश्य देखा होगा कि कोई बूढ़ा व्यक्ति बीड़ी पी रहा है और खाँस रहा है, लगातार बीड़ी पीता है और लगातार खाँसता है। इसका क्या अर्थ है? यही कि नशे ने उसे इस हालत में पहुँचा दिया है और अब वह इस लायक नहीं रह गया है कि और नशा कर सके। इस पाठ के बूढ़े कृत्रिम उपायों के बल पर सड़क पर चलना चाहते हैं, चाँद की तरफ़ देखते हैं, बगीचे में घूमते हैं, संगीत-सभा में बैठते हैं और आवश्यकता से अधिक भोजन करते हैं। होना तो यह चाहिए कि इन बूढ़ों को खुशी के साथ सारा मोह तथा लोभ त्यागकर सब कुछ अगली पीढ़ी को सौंप देना चाहिए, जिससे कि उसके विकास का मार्ग तैयार हो सकें। परंतु यहाँ ऐसा नहीं हैं। इस बात की सूचना इस व्यंग्य के आरंभिक अंश से मिलती है।

विषय-वस्तु

इस आरंभिक अंश के बाद हम पाठ की विषय-वस्तु की ओर आगे बढ़ते हैं। लेखक बताता है कि एक दिन युवाजन उन वृद्धों के पास आए और उनसे निवेदन किया कि वे बहुत वृद्ध तथा यशस्वी हो चुके हैं। अब उन्हें आराम करना चाहिए और आशीर्वाद देते रहना चाहिए, क्योंकि अब वे पूजनीय हो गए हैं। युवकों के अनुसार जिस प्रकार देवताओं को मंदिर में स्थापित कर उनकी पूजा की जाती है, वैसी ही पूजा अब उन वृद्धों की भी होनी चाहिए। वृद्धों को यह बात पसंद आ जाती है परंतु उन्हें शंकाएँ हैं कि उनके यश, उनके झंडों, भोग, आमदनी तथा उनके प्रति श्रद्धा का क्या होगा?

यहाँ आप ज़रा दिमाग पर ज़ोर डालकर सोचें तो पाएँगे कि यश, झंडे, भोग, श्रद्धा और आमदनी से भाव यह है कि अब तक वे वृद्ध अपने जीवन में जो करते रहे, जिस किसी मान्यता या खेमे को स्थापित कर पाए, यश पा सके उन सबकी निरंतर प्रतिष्ठा या प्राप्ति अब कैसे संभव होगी।

इसका समाधान युवकों ने बहुत आसानी से कर दिया। उन्होंने वृद्धों को आश्वासन दिया कि उन्हें रोज़ भोग यानि श्रेष्ठ भोजन आदि उपलब्ध होता रहेगा। मंदिर में उनकी आरती उतारकर श्रद्धा-भाव प्रकट किया जाता रहेगा। वृद्ध साहित्यकारों की जो आमदनी अपनी पुस्तकों की बिक्री से होती थी, जिसे रॉयल्टी कहा जाता है, उन तक नियमित रूप से पहुँचाने की व्यवस्था हो जाएगी।

आप ठीक ही समझ रहे हैं कि जिस प्रकार देवता मंदिर में स्थापित हो सब कुछ प्राप्त करते रहते हैं, वैसे ही ये वृद्ध साहित्यकार भी प्राप्त करते रहेंगे। लेकिन यह साधारण अर्थ है। व्यंग्य यह है कि ये बुजुर्ग केवल इसी लायक रह गए हैं कि बैठकर अगली पीढ़ी

को आशीर्वाद दें और समाज में मूर्ति के रूप में रहें। ये अब जीवन के उस पड़ाव पर पहुँच चुके हैं जिसके बाद सर्जनात्मकता या कुछ नया करने की संभावना समाप्त हो जाती है और जीवन निष्क्रिय हो जाता है। इनकी ज़रूरतें भी अब बहुत अधिक नहीं रह गई हैं। इसलिए सहजरूप में जितना मिल सके उतने में ही इन्हें संतोष करना चाहिए। बहुत अधिक प्राप्त करने के लालच को छोड़ देना चाहिए। देवता नाम में भी व्यंग्य है। जिस प्रकार देवता राग-द्वेष से दूर रहते हैं, उसी प्रकार इन बूढ़ों को भी रहना चाहिए। लेकिन ये देवता के पद को तो अपना लेते हैं पर आचरण देवताओं जैसा नहीं कर पाते।

लेखक के अनुसार एक वयोवृद्ध ने बहुत महत्त्वपूर्ण सवाल किया कि *''पर हम कर्म के बिना कैसे जीवित रहेंगे।''* वृद्धों की यह आशंका स्वाभाविक थी, क्योंकि आप जानते ही हैं कि जीवन में कुछ तो कार्य करना ही चाहिए। अच्छे कार्य को, अपने कर्त्तव्य को निभाना ही कर्म कहलाता है।

इस पर युवकों ने सुझाव दिया कि आप वृद्ध लोग एक-दूसरे को अपने विगत जीवन के संस्मरण सुनाएँ, जिसकी रिकॉर्डिंग करके उसकी पुस्तकें छपवा दी जाएँगी। आपने ऐसे अनेक वयोवृद्ध व्यक्तियों को देखा होगा जो अपने अतीत की प्रशंसा बहुत करते हैं और उसके संस्मरण सुनाते हैं। तो वे बूढ़े भी इसी लायक रह गए हैं कि आपस में बैठकर बीती बातें, किस्से और रोचक संस्मरण सुनाएँ। वृद्ध सहमत हो गए और उन्होंने देवता बनना मंजूर कर लिया।

उपर्युक्त प्रकरण में लेखक ने कई व्यंग्यात्मक प्रहार किए हैं, जो वृद्धों की हठधर्मिता और मोह को प्रकट करते हैं। चलते-चलते ऐसे प्रकाशकों पर भी व्यंग्य किया गया है जो रॉयल्टी देने में आनाकानी करते हैं।

व्यंग्य के अंतिम भाग में वयोवृद्ध साहित्यकारों को देवता बनाकर मंदिरों में प्रतिष्ठित कर दिया जाता है। देवता बनकर प्रतिष्ठित होने के बाद वृद्धों का ध्यान युवकों पर गया। वे उनके बारे में बात करने लगे कि वे बाहर की दुनिया का आनंद ले रहे होंगे और हम मंदिर रूपी कारागार में बंद हैं। बाहर युवकों में से कोई नाटक देख रहा होगा, कोई पकवान खा रहा होगा। सब खुश होंगे, मस्त होंगे। यहाँ पर लेखक कहना चाहता है कि वृद्धजन देवता तो बन गए लेकिन मोह को न छोड़ पाए। इसलिए युवकों के जीवन की खुशी और उत्साह के प्रति उनमें ईर्ष्या या जलन का भाव उत्पन्न होता है। लेकिन इनमें एक वृद्ध ऐसा है जो दूसरों की तरह नहीं बल्कि समझदार है। वह कहता है 'वे युवक हैं, तरुण हैं, खाने–खेलने लायक हैं। हम तो इस योग्य अब रहे नहीं, ज़्यादा खाएँगे तो हाजमा खराब होगा। कुछ काम करेंगे तो साँस फूल जाएगी। ये भोग का जीवन अब हमारे लिए नहीं रहा। इतना ही काफी है कि वे हमारी वंदना करते हैं। यही हमारे लिए ठीक भी है।' लेकिन दूसरे देवताओं को यह बात पसंद नहीं आई, उन्होंने प्रतिवाद में कहा कि जो हमारा था उस पर युवकों ने अधिकार जमा लिया। जहाँ कभी हम थे वहाँ वे हैं, हमें केवल मूर्ति बनाकर रख दिया गया है। प्रायः सभी देवताओं के मन में अपने अधिकार वापस लेने की लालसा थी। वह देवता इनमें शामिल न हुआ और उसने वही किया जो ऐसे मौके पर अकेला पड़ गया व्यक्ति करता है। वह चुपके से वहाँ से उठकर मंदिर के दूसरे हिस्से में चला गया। इस बूढ़े व्यक्ति के प्रति आपके मन में कैसा भाव जगता है? सभी देवताओं में यही आपको सही और अच्छा लगा होगा। वह इसलिए कि

लेखक भी चाहता है कि बुजुर्गों को ऐसा ही होना चाहिए। उन्हें अपनी स्थिति और क्षमता का बोध होना चाहिए। दूसरे के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि रखनी चाहिए, खासतौर पर युवाओं के प्रति। इसका अर्थ यह हुआ कि लेखक सभी बुजुर्गों पर व्यंग्य नहीं करता। केवल ऐसे लोगों पर व्यंग्य करता है जो अपने निरर्थक स्वार्थ के कारण दूसरों का मार्ग रोककर खड़े हो जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 17.1

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. देवता जब अकेले छूट गए, उनका ध्यान तरुणों पर गया क्योंकि
   (क) वे सड़कों पर घूम रहे थे।
   (ख) वे नाटक देख रहे थे।
   (ग) वे कविता सुना रहे थे।
   (घ) उन्होंने वृद्धों का स्थान ले लिया था।

2. वृद्ध बातें करते-करते एकदम उदास हो गए थे क्योंकि
   (क) उनके खाने-पीने का ध्यान नहीं रखा जा रहा था।
   (ख) उन्हें प्रकाशक रॉयल्टी नहीं दे रहा था।
   (ग) वे देवता बने मंदिर में सजे थे और युवा आनंद मना रहे थे।
   (घ) वे संगीत-सभा का आनंद नहीं ले पा रहे थे।

3. तरुणों ने वृद्धों को किस रूप में प्रतिष्ठित कर दिया?
4. युवकों ने वृद्धों को कर्मशील बने रहने के लिए क्या सलाह दी?
5. वृद्ध सबसे अधिक किस बात पर क्षुब्ध थे?

अंश - 2

उपसंहार

अंत में देवताओं ने सलाह करके जो निष्कर्ष निकाला वह शाम को युवकों के आने पर ज़ाहिर हुआ। जैसे ही युवक थाल में मिठाई सजाकर लाए तो देखा कि देवता लोग चबूतरे पर खड़े हैं और उन्होंने युवकों पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए।

युवकों ने इस पथराव का कारण पूछा। देवताओं ने कहा तुमने हमें उन सबसे रहित कर दिया जो कल तक हमारा था। अब युवकों ने स्पष्ट किया कि उन सबसे वंचित रहने का मूल कारण उनकी बढ़ती उम्र, ढलती शक्ति आदि ने किया है–हमने नहीं। फिर भी हम तुम्हें सम्मान दे रहे हैं और तुम हो कि पत्थर से हमें चोट पहुँचा रहे हो, हमें अपमानित कर रहे हो।

इस पर देवताओं ने पहले से तैयार अपना फ़ैसला सुना दिया कि जिन राहों पर हम

चले थे, उन पर युवक न चलें, जो हमारा भोज्य था, वह युवक नहीं खाएँगे तथा झंडे भी हमारे ही फहराये जाएँगे, युवकों के नहीं।

आप समझ ही रहे होंगे कि झंडे से यहाँ तात्पर्य अपना सिद्धांत, अपना मत और अपना वर्चस्व है।

नए युग के युवकों ने देवताओं का फैसला मानने से इनकार कर दिया जिस पर कुपित हो देवताओं ने उन्हें पत्थर मारने शुरूकर दिए और जैसी कि उम्मीद थी, एक युवक ने आव देखा न ताव, पीपल के पेड़ पर फहरा रहे देवताओं के झंडों को ही फाड़ कर फेंक दिया। दोनों ओर से हमले होने लगे और जब एक राहगीर ने दूसरे से मामला पूछा, जवाब आया– यह लड़ाई नहीं है बल्कि दो पीढ़ियों के बीच कलागत मूल्यों पर बहस हो रही है। कलागत मूल्य एक व्यंग्योक्ति है। बरसों तक कला को लेकर प्रश्न उठते रहे हैं लेकिन उनके निश्चित उत्तर आज भी नहीं मिल पाए हैं। ऐसे ही पुरानी और नई पीढ़ी के बीच यह बहस सदा जारी है। इसके जरिए परसाई जी भी उन बहसों पर कटाक्ष कर रहे हैं जो व्यर्थ में केवल विरोध के लिए की जाती हैं, उनसे समाज को हासिल कुछ नहीं हो पाता।

यह था इस व्यंग्य रचना का कथ्य। यह पीढ़ियों के संघर्ष को उजागर करता है। नई पीढ़ी को दायित्वहीन कहने वाली पुरानी पीढ़ी दरअसल नए लोगों पर दायित्व सौंपना ही नहीं चाहती। उसे भय रहता है कि कहीं हमारे वर्चस्व को समाप्त करके नई पीढ़ी अपना वर्चस्व स्थापित न कर ले। हम समझ सकते हैं कि पुरानी पीढ़ी की यह लालसा और झूठा भय किस प्रकार समाज की युवा-पीढ़ी के विकास, उसकी स्वतंत्रता और सुख-समृद्धि को प्रभावित करती है। जिस समाज में ऐसी पुरानी पीढ़ी होगी उस समाज के युवक कुंठित, आत्म विश्वास विहीन तथा अकेलेपन से ग्रस्त होकर समाज विरोधी होंगे।

शीर्षक की सार्थकता

इस व्यंग्य का शीर्षक है ''पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ'' पीढ़ियाँ वय (उम्र) और अनुभव के भेद को दर्शाती हैं। पुरानी पीढ़ी के अंतर्गत वृद्ध माता-पिता, गुरु आदि आते हैं तथा नई पीढ़ी के अंतर्गत युवा, शिष्य, पुत्र आदि आते हैं। हर पीढ़ी की अपनी अलग सोच होती है, जो पीढ़ी के बदलते ही नया रूप ग्रहण कर लेती है। प्रायः पीढ़ी का यह क्रम बारह से सोलह वर्षों में बदल जाता है, क्योंकि लगभग इतने समय में ही छोटे बच्चे युवक बन जाते हैं।

गिट्टियाँ होती हैं ढेले, छोटे-छोटे पत्थर या इसी प्रकार का कोई अन्य तत्त्व।

एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को गिट्टियाँ मारती है, पत्थर मारती है अर्थात् प्रताड़ित करती है। नई पुरानी पीढ़ियों में कोई भी अपने को दूसरे से नीचा नहीं देखना चाहता, इसीलिए दोनों में संघर्ष चलता रहता है। संघर्ष प्रायः विचार, सोच, मत के धरातल पर होता है। लेखक ने संकेत से इसे गिट्टियाँ कहा है।

अपने विचारों को दूसरों पर लादने के कारण इस रचना का यह शीर्षक ''पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ'' सार्थक लगता है।

क्रियाकलाप

हमारे परिवारों में अधिकतर वृद्ध नई पीढ़ी के विरोधी नहीं होते। वे किशोरों और युवकों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करते हैं। उन्हें अपना फ़ैसला खुद करने के अधिकार देते हैं और उनके मानसिक विकास के रास्ते खोलते हैं। इस संबंध में आपका भी कोई-न-कोई अनुभव अवश्य रहा होगा। उसका उल्लेख कीजिए।

पाठगत प्रश्न 17.2

सही विकल्प चुनकर पूछे गए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. वृद्ध तरुणों को पत्थर मार रहे थे, क्योंकि–
   (क) तरुण उनकी पूजा करते थे।
   (ख) वे उन सड़कों पर चल रहे थे, जो वृद्धों की थी।
   (ग) वे मान रहे थे कि इन्हें सुविधाओं से वंचित किया गया है।
   (घ) उन्हें पूजा नहीं चाहिए थी।
2. जो वृद्ध मंदिर के दूसरे हिस्से में चला गया था–
   (क) उसी ने युवकों पर पत्थर फेंके।
   (ख) वह सबसे अधिक सुविधाएँ चाहता था।
   (ग) वह युवकों से सहानुभूति रखता था।
   (घ) फिर से आकर वृद्धों के साथ मिल गया।
3. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' शीर्षक व्यंग्य रचना के लेखक कौन हैं?
4. इस रचना में नई पीढ़ी के लोगों ने पुरानी पीढ़ी के लोगों को कहाँ स्थापित कर दिया।

17.5 भाषा-शैली

'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' हरिशंकर परसाई की एक व्यंग्य-रचना है। पहले आप पढ़ चुके हैं कि व्यंग्य किसे कहते हैं। जी, हाँ। किसी भी बात को सीधे-सीधे न कह कर उचित शब्दों और मुहावरों का उलट-पुलट और चमत्कृत प्रयोग ही बात में व्यंग्य पैदा करता है।

'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' नामक व्यंग्य एक ओर तो वृद्धों की बढ़ती उम्र परंतु मन में दबी इच्छाओं को उद्घाटित करता है, तो दूसरी ओर अगली पीढ़ी के तरुण और युवा जो वृद्धों द्वारा जीवन की सुविधाओं और साधनों पर रोक-टोक से परेशान थे, उनकी मनः स्थिति को बताता है। दोनों पीढ़ियों के बीच इस वर्चस्व को लेकरऽसंघर्ष होता है।

पूरा व्यंग्य आम बोलचाल की भाषा में लिखा गया है। इसमें वाक्य छोटे-छोटे हैं, जो संवाद के रूप में लिखे गए हैं। ये संवाद विषय के अनुरूप और सटीक हैं। कहीं-कहीं तो लेखक ने हाज़िरजवाबी का परिचय दिया है। उदाहरण के लिए:

टिप्पणी

''और हमारे भोग का क्या होगा?''

''हम आपके भोग का भी प्रबंध करेंगे। रोज़ हम पकवानों के थाल लेकर आएँगे।''

''हमें श्रद्धा भी तो चाहिए। उसका क्या प्रबंध होगा?''

''हम रोज़ आपकी आरती करेंगे और आपके चरणों पर मस्तक रखेंगे।''

व्यंग्य की भाषा की यह विशेषता होती है कि देखने में तो शब्द और वाक्य-संरचना बिल्कुल स्पष्ट और सीधी-सादी होती है परंतु अर्थ की दृष्टि से वह बहुत गहरी और गंभीर बात की ओर संकेत करती है। जैसे पाठ के शुरू में ही फिर से पढ़िए–

''साहित्य के वयोवृद्ध थकित हुए''

''वे लाठी टेकते हुए सड़क पर चलते। मोटा चश्मा लगाकर चाँद देखते, निमोनिया की दवा जेब में रखकर बगीचे में घूमते। कान में ऊँचा सुनने का यंत्र लगाकर संगीत-सभा में बैठते। भोजन से अधिक मात्रा में पाचन का चूरन खाते।''

पहला वाक्य बताता है कि आगे लिखी सभी बातें साहित्य के क्षेत्र में कार्यरत वयोवृद्ध और जीवन से थके व्यक्तियों के लिए लिखी गई हैं। और उसके बाद का एक-एक वाक्य व्यंग्य में लिखा गया है अर्थात् वाक्य तो सीधे हैं परंतु वे अर्थ कुछ और ही देते हैं। जैसे ''मोटा चश्मा लगाकर चाँद देखते।'' में कहने का तात्पर्य है कि उन वृद्धों को कुछ दिखाई नहीं देता है, फिर भी इच्छा चाँद को देखने की है।

इसी प्रकार बगीचे में घूमना उन्हें इतना पसंद है कि वे ठंड में भी घूमते हैं, परंतु कहीं निमोनिया न हो जाए इस डर से हमेशा दवाइयाँ भी खाते रहते हैं। संगीत-सभा में जाना उनके लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है, चाहे वे उसे यंत्र लगाकर ही क्यों न सुनें। उनकी चूरन खाने की मात्रा भोजन से अधिक होती है यानी की भोजन पचाने के लिए भोजन से अधिक चूरन खाने पर मजबूर हैं। कहने का तात्पर्य हुआ कि जितना उन्हें भोगना था भोग चुके हैं पर अभी भी तमन्ना है– हर चीज को और अधिक भोगने की। संतुष्टि कहीं भी नहीं है। आगे भी इसी प्रकार के वाक्य हैं, ध्यान दीजिए–

''हमारे अर्थ का क्या होगा?''

''आपकी रॉयल्टी हम मंदिर में ही पहुँचा दिया करेंगे। आपको हम हर पाठ्य-पुस्तक में रखवाएँगे, और जो प्रकाशक धन देने में आनाकानी करेगा, उसे ठीक करेंगे।''

ये सभी बातें वृद्ध साहित्यकारों पर कटाक्ष करती हैं। साहित्यकार सदैव रॉयल्टी के लिए परेशान रहते हैं, पाठ्य-पुस्तकों में अपनी रचनाएँ रखवाने के लिए हा-हा खाते हैं, प्रकाशकों से हमेशा परेशान रहते हैं और विशेष रूप से आप ''ठीक करेंगें'' शब्द पर ध्यान दीजिए यह पूरी बात से स्पष्ट होता है कि यहाँ ठीक करेंगे का अर्थ है– डंडे के बल पर प्रकाशक से रॉयल्टी आपके लिए ले आया करेंगे यानी कि तरुण वृद्धों के लिए एक बहुत बड़ा काम करके देंगे जो उनके बस की बात नहीं है।

लेखक ने एक स्थान पर कहा है **'स्मरणीयो, सुनामधन्यो!'** यह संबोधन वाचक है। हिंदी भाषा में संबोधन का प्रयोग करते समय अक्सर लोग एक बिंदी और लगा देते हैं जैसे ''प्रिय मित्रों'' जो गलत है, सदैव 'प्रिय मित्रो!', 'प्रिय बहनो!' का ही प्रयोग करना उचित है जो भाषाई दृष्टि से शुद्ध है।

आगे वाक्य पर ध्यान दीजिए "**युवकों** ने एक दिन समारोहपूर्वक **वयोवृद्धों** को देवता बनाकर मंदिर में प्रतिष्ठित कर दिया—तब उनका ध्यान **तरुणों** पर गया।" "**सड़कों** पर घूम रहे **होंगे**" इन काले उभरे शब्दों में मात्रा के साथ बिंदी भी लगी है यहाँ इन सभी का **प्रयोग बहुवचन** के लिए किया गया है।

लेखक ने पूरे पाठ में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। अब तक आप समझ चुके होंगे कि व्यंग्यात्मक शैली किसे कहते हैं? जी, हाँ **व्यंग्यपूर्ण अंदाज़ में किसी बात को कहना ही व्यंग्यात्मक शैली होती है।**

लेखक ने स्थान-स्थान पर मुहावरों का **सटीक** प्रयोग किया है, जैसे—आनाकानी करना—किसी बात को टालना, ठीक करना—बलपूर्वक काम करवाना, ऊँचा सुनना—कम सुनाई देना, खाने-खेलने देना—जीवन का आनंद लेने देना।

आइए, अब कुछ बातें शब्द-शक्ति के बारे में करते हैं। **शब्द-शक्तियाँ मुख्यतः तीन प्रकार की होती हैं—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।** जब किसी बात को सीधे-सादे शब्दों में कहा जाता है और वे शब्द प्रचलित अर्थ बताते हैं, **अभिधा** कहलाती है। जैसे—आप कहें कि मैंने चाँद देखा इसका सीधा-साधा अर्थ हुआ कि रात को आकाश में चमकता हुआ चाँद देखा। परंतु यदि यह कहें कि मैंने सुबह-सुबह चाँद देखा तो इसका अर्थ होगा कि मैंने सुबह ही किसी अपने परम प्रिय व्यक्ति का चेहरा देखा क्योंकि आप जानते हैं कि सुबह चाँद दिख ही नहीं सकता। शब्दों की वह शक्ति जो मुख्य अर्थ से हटकर अर्थ दे और साथ-साथ अन्य अर्थ की कल्पना करनी पड़े तो वह **लक्षणा** कहलाती है। तीसरे प्रकार की शक्ति को **व्यंजना** कहते हैं। व्यंजना का अर्थ होता है—विशेष प्रकार का अर्थ। यह परिस्थिति के अनुसार अर्थ देता है। जैसे किसी सोते हुए बच्चे से कहें कि बाहर सवेरा हो गया चिड़िया बोलने लगी। इसका अर्थ यह हुआ कि अब तुम भी उठ जाओ और बिस्तर छोड़ दो। किसी भी व्यंग्य में 'व्यंजना' शब्द-शक्ति का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाता है।

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत "केंद्रीय हिंदी निदेशालय" ने 'मानक वर्तनी' की पुस्तिका प्रकाशित की है जिसका पालन इस पाठ्य पुस्तक में यथासंभव किया गया है, जैसे 'गिट्टियाँ' मुद्रित किया गया। संयुक्ताक्षरों को पृथक-पृथक आगे-पीछे लिखना चाहिए, जैसे 'गद्य' 'गद्य' नहीं। फिर भी प्रेस के कारण 'वृदध' के स्थान पर 'वृद्ध' भी चला गया है। कंप्यूटर के युग में जबकि 'स्पेलचेक' (वर्तनी जाँचक) ही सब कुछ भविष्य में ठीक करेगा, वर्तनी की एकरूपता वह भी लिखित शब्दों का मानक रूप अत्यावश्यक है।

पंचमवर्ण के शुरू पर पहले वर्ण के ऊपर बिंदी का प्रयोग ही मान्य है, जैसेः—

'कादम्बिनी' के स्थान पर 'कादंबिनी' 'अन्तर' के स्थान पर 'अंतर' 'मन्दिर' के स्थान पर 'मंदिर', 'प्रबन्ध' के स्थान पर 'प्रबंध' लेखक की मूल प्रति से छेड़छाड़ नहीं की गई है, ऐसी स्थिति में पुरानी वर्तनी का प्रयोग भी आपको इस पाठों में दिखाई देगा।

भाषा कार्य

निम्नलिखित कथनों को पढ़िए—

1. वे प्रातः स्मरणीय हैं, सुनामधन्य हैं। वृद्ध हो गए हैं।

2. प्रातः स्मरणीयो, सुनामधन्यो! आप अब वृद्ध हुए।
3. अब आप आराम से रहें।

क्या आप तीनों कथनों को एक ही स्वर में पढ़ते हैं? निश्चय ही नहीं। पहला कथन तीन साधारण वाक्यों से बना है और आप विरामचिह्नों पर रुकते हुए लगभग समान स्वर में वाक्य कह जाते हैं, किंतु दूसरे वाक्य में आप पहले वाक्य के ही शब्दों को संबोधन के रूप में बोलते हैं तो अंत में अपने सुर को खींचते हैं। तीसरे वाक्य में फिर सुर बदल जाता है।

भाषा में कुछ ऐसे तत्त्व होते हैं, जिन्हें लिपि से नहीं समझाया जा सकता। वे हैं बलाघात और अनुतान। शब्द के एक अंश को बोलने में जो बल दिया जाता है, उसे ही बलाघात कहते हैं। जैसेः अब आप आराम से रहें–'इस वाक्य में *'अब'* और 'आप' में पहले अक्षर पर बलाघात है किंतु 'आराम' में 'रा' पर। इसी प्रकार ऊपर दिए अन्य वाक्यों में भी शब्दों में बलाघात का स्थान बोलकर पहचानिए। 'प्रातः स्मरणीयो' में 'तः' पर, 'सुनामधन्यो' में 'ना' पर बलाघात है।

अनुतान उच्चारण की सुरलहर है। प्रश्न पूछने में प्रायः वाक्य के अंत में सुर ऊँचा उठता है। संबोधन में संबोधन वाले शब्द के अंत में अनुतान होता है, जैसेः

- *देवताओ! पत्थर क्यों मार रहे हो?*
- *किससे वंचित किया है?*
- *और कोई जी भी नहीं सकता!*

'दो कलाकार' कहानी को भी उचित अनुतान और बलाघात के साथ पढ़िए।

पाठगत प्रश्न 17.3

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. "लड़के इस समय न जाने क्या कर रहे होंगे।"–वृद्ध के इस कथन में कौन-सा भाव निहित है?
   (क) लड़कों के प्रति सहानुभूति का।
   (ख) देवता बन जाने पर भी मोह न छोड़ पाने का।
   (ग) भोग नहीं लगाए जाने के कारण लड़कों के प्रति क्रोध का।
   (घ) लड़के उनकी रायल्टी नहीं लाए थे इसलिए नाराज़गी का।
2. "दो पीढ़ियों की कलागत मूल्यों पर बहस चल रही है।" इस कथन के द्वारा नागरिक–
   (क) देवताओं और तरुणों पर व्यंग्य कर रहा है।
   (ख) दो पीढ़ियों की बहस पर गंभीरता से विचार कर रहा है।
   (ग) समाज के लिए दो पीढ़ियों का महत्त्व बता रहा है।
   (घ) युवकों के पागलपन के बारे में बता रहा है।
3. निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए–
   (क) आनाकानी करना ....

(ख) वाह-वाह लूटना ....

(ग) खाने-खेलने देना ....

4. किसी भी व्यंग्य रचना में प्रायः कौन-सी शब्द-शक्ति सर्वाधिक उपयोग में लाई जाती है?

5. ''खाने-खेलने दो लड़कों को'' यह कथन किसका है?

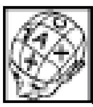

17.6 आपने क्या सीखा

1. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' एक व्यंग्य रचना है, जो साहित्यिक क्षेत्र के वृद्धों और युवकों की मानसिकता को स्पष्ट करती है।
2. व्यंग्य में शब्दों की गहरी मार होती है जो व्यक्ति को झकझोर देती है।
3. व्यंग्य में विचारों की गहराई होती है ज़ो व्यक्ति को सोचने पर मजबूर करती है। व्यंग्य को अंग्रेज़ी में 'सटायर', गुजराती में 'कटाक्ष' और उर्दू में 'तंज' कहते हैं।
4. व्यंग्य में मुहावरे और व्यंग्योक्तियों का बहुत महत्त्व होता है, जो भाषा को अधिक प्रभावशाली और पैना बनाता है।
5. पाठ में छोटे-छोटे वाक्य संवादात्मक और व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किए गए हैं।
6. भाषा सरल है। मुहावरों का सटीक प्रयोग किया गया है।
7. पाठ में दो पीढ़ियों का संघर्ष दर्शाया गया है।

17.7 योग्यता विस्तार

1. लेखक परिचय

विख्यात व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त 1922 को मध्य प्रदेश में जिला होशंगाबाद के जामनी गाँव में हुआ। नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. करने के बाद उन्होंने कुछ समय तक नौकरी की। उन्होंने सन् 1957 से लेखन को ही आजीविका का साधन बनाया। जबलपुर से 'वसुधा' नामक पत्रिका निकाली। 'नई दुनिया', 'नई कहानियाँ' तथा 'सारिका' में स्थायी स्तंभ लिखे। आप व्यंग्य-सम्राट कहे जाते हैं। आपकी रचनाओं में 'रानी नागफनी की कहानी', 'सदाचार का ताबीज', 'वैष्णव की फिसलन', 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', 'विकलांग श्रद्धा का दौर' प्रमुख हैं। आपकी समस्त रचनाएँ 'परसाई रचनावली' के रूप में छह खंडों में संकलित है। आपके व्यंग्य कथात्मकता और करुणा लिए होते हैं। दिनांक 18 अगस्त 1995 को जबलपुर में आपका देहावसान हुआ।

2. हरिशंकर परसाई समकालीन व्यंग्यकारों में सबसे बड़े रचनाकार माने जाते हैं। वे समाज में फैली विसंगतियों, असमानताओं तथा विडंबनाओं का बहुत विनोदपूर्ण वर्णन करते हैं। सामाजिक तथा राजनैतिक समस्याओं पर उनकी कलम खूब चलती है।

3. प्रत्येक विधा में तीन-चार पीढ़ियाँ एक साथ लिखती रहती हैं। व्यंग्य की चार पीढ़ियों का लेखन एक साथ चलता रहा है। परसाई जी की पीढ़ी में शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी। उनके बाद वाली दूसरी पीढ़ी में नरेंद्र कोहली, शंकर पुणताम्बेकर और अशोक शुक्ल, तीसरी पीढ़ी में ज्ञान चतुर्वेदी, प्रेम जनमेजय और हरीश नवल तथा चौथी पीढ़ी में डॉ. शरद राकेश, शिवानंद कामड़े आदि हैं।

4. प्रस्तुत रचना का नाट्य रूपांतर करके अपने घर, मोहल्ले या किसी संस्था में नाट्य प्रस्तुत कीजिए।

5. आस-पास के पुस्तकालयों में जाइए और व्यंग्य संकलन लेकर पढ़िए और जानने की कोशिश कीजिए कि किस प्रकार यह कहानी या निबंध से अलग है।

17.8 पाठांत प्रश्न

1. व्यंग्य किसे कहते हैं? 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' एक व्यंग्य रचना है, सिद्ध कीजिए।
2. नई पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी से क्या चाहती है?
3. पुरानी पीढ़ी के लोग नई पीढ़ी को आगे क्यों नहीं आने देते?
4. लेखक ने सभी वृद्धों पर व्यंग्य किया है या खास प्रकार के वृद्धों पर? पाठ से उदाहरण देते हुए अपनी बात सिद्ध कीजिए।
5. तरुणों और वृद्धों के संवादों को अपने शब्दों में विवरण के रूप में लिखिए।
6. एक देवता जो मंदिर के दूसरे हिस्से में चला गया, उसके बारे में अपने विचार लिखिए।
7. स्नेहपूर्ण सामाजिक वातावरण, युवकों के मानसिक-भावनात्मक विकास और भौतिक उपलब्धियों के लिए पुरानी और नई पीढ़ी के बीच किस प्रकार का संबंध आवश्यक है?
8. निम्नलिखित उक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए:
   (क) वे भोजन से अधिक मात्रा में पाचन का चूरन खाते।
   (ख) आपको हम हर पाठ्य-पुस्तक में रखवायेंगे और जो प्रकाशक धन देने में आनाकानी करेगा उसे ठीक करेंगे।
   (ग) आप लोगों की संस्मरण की अवस्था है। आप लोग आपस में संस्मरण सुनायेंगे ही। उनका रिकार्डिंग होता जाएगा और हम पुस्तक छपवा देंगे।
   (घ) लड़के बाहर ऐसा आनंद कर रहे हैं और देवता बने हम मंदिर की कारा में बैठे हैं।

(ङ) तुम बिल्कुल निःसत्व हो। तुम्हें इस बात का बुरा नहीं लगता कि जहाँ-जहाँ हम थे, वहाँ-वहाँ वे जम गए हैं।

9. हरिशंकर परसाई की भाषा-शैली पर टिप्पणी कीजिए।

10. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः

वृद्ध की चाह थी कि बेटा तर्क न कर, उसके इंगित किए पथ पर चले, पर बेटे का पथ अपने हृदय की आकांक्षाओं की ओर था। हर बात पर दोनों में मतभेद रहता। अपनी-अपनी राय में दोनों ही सही थे।

एक दिन अपनी जरा-विकंपित गरदन को प्रयत्नपूर्वक रोकते हुए बूढ़े ने कहा– ''मूर्ख, मुझे उपदेश देता है! जुमा-जुमा आठ दिन; कल ही तो तू पैदा हुआ था! तब मैं तुझे अपनी गोद में न लेता, तो माँस के एक लोथड़े की तरह गिद्ध तुझसे अपना त्योहार मना लेते!''

प्राचीनता के प्रति भीतर उमड़ी अवज्ञा की बाढ़ को प्रयत्नपूर्वक रोकते हुए युवा ने कहा– ''मैं नहीं चाहता कि तुम्हारी घिसी हुई अक्ल के भरोसे पर चलूँ। मुझमें उमंग है, साहस है, मैं अपना पथ स्वयं निर्माण करूँगा!''

आकाश दोनों की बातें सुन रहा था। उसने अठखेलियाँ करती अपनी तारिकाओं से कहा– ''एक के पास अनुभव है और दूसरे के पास उत्साह, पर दोनों ही भटक गए हैं। बूढ़े की आँखों में 'कल' की कला है, पर 'आज' की शक्ति का अनुभव उसे नहीं हो पाता और युवा देखता है, केवल 'आज' की ऊँची अट्टालिका, पर उसकी नींव रखने में 'कल' ने जो श्रम किया था, उधर उसकी नज़र नहीं जाती!''

बूढ़ा और युवक एक दूसरे को घूर रहे थे। आकाश की बातें क्या उन्होंने सुनीं?

(क) दो पीढ़ियों के किस मतभेद की ओर लेखक ने संकेत किया है?

(ख) वर्तमान पीढ़ी को किस बात पर अधिक विश्वास है?

(ग) आकाश क्या सुझाव देना चाहता है?

(घ) कल्पना कीजिए यदि आकाश की बातें बूढ़े और युवक ने सुनी होतीं तब उनकी क्या प्रतिक्रिया होती।

(ङ) यदि आप युवक के स्थान पर होते तब आपकी क्या प्रतिक्रिया होती?

11. इस पाठ में साहित्य की पुरानी और नई पीढ़ी का संघर्ष दिखाया गया है। ऐसा संघर्ष हम जीवन के दूसरे क्षेत्रों में भी देखते हैं। आप अपना कोई ऐसा अनुभव लिखिए जब आपको लगा हो कि बुजुर्गों का अनावश्यक हस्तक्षेप युवकों की स्वतंत्रता और उनके विकास को बाधित करता है।

17.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ख) 2. (ग) 3. (ख), (क), (घ), (ङ), (ग)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1 1. (घ), 2. (ग) 3. देवता रूप में,
4. आपस में संस्मरण सुनाएँ, बाद में किताबें प्रकाशित हो जाएँगी।
5. अपना अधिकार युवकों के हाथों में चले जाने पर

17.2 1. (ग), 2. (ग) 3. हरिशंकर परसाई, 4. मंदिर में

17.3 1. (ख) 2. (क) 3. स्वयं कीजिए, 4. व्यंजना शब्द-शक्ति
5. समझदार वृद्ध का